स्त्री शिक्षा की वर्तमान दशा एवं दिशा

कु. उल्का शशिकांत फराकटे
अनुसंधान छात्रा, राजनिती विज्ञान विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापूर. (महाराष्ट्र)

प्रस्तावना :—

शिक्षा के पंखो से उडकर
छू लूं आसमान
कर लूं दूनिया मुठी में
हो जाएं सपने साकार

नारी इस समाज का अहम हिस्सा हैं। इस समाज के निर्माण में नारी का विशेष स्थान रहा है। हर काम में नारी पूरुषों के समान ही भागीदार रही है, फिर भी आज के दौर में महिला ही दशा दयनीय बनी हुई है। यह पूरुष प्रधान देश, देश की बेटी को दबाता है। नारी तो सिर्फ आदर का एक नाम ही रह गयी है। पूरुषों ने नारी को दासी बनाकर रखा है। यहां तक की उसे शिक्षा के अधिकार से भी वंचित कर दिया है। अगर नारी ही शिक्षित नही होगी तो वह न तो सफल गृहिणी बन सकेगी और न कुशल माता। समाज में बाल—अपराध बढने का कारण बालक का मानसिक रुप से विकसीत न होना है। अगर एक माँ ही अशिक्षित होगी तो वह अपने बच्चों का सही मार्गदर्षन करके उनका मानसिक विकास कैसे कर पाएगी और एक स्वस्थ समाज का निर्माण एवं विकास संभव नही हो सकेगा। अत: यह कहा जा सकता है कि शिक्षित नारी ही भविष्य में निराषा एवं शोषण के अन्धकार से निकलकर परिवार, स्त्री शिक्षा स्त्री और शिक्षा को अनिवार्य रुप से जोडने वाली अवधारण है। इसलिए महिला का शिक्षित होना जरुरी है। ताकि समाज के कार्यो में और अपने परिवार मे योगदान दे सकती है।

स्त्री पढेंगी तो वो अपने परिवार को सुचारु रुप से चला पाएगी। उसे दूसरों पर आश्रित नही रहना पडेगा और अपने कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति भी सजग रहेगी। एक नारी अपने जीवन में तीन अहम भूमिका निभाती है। एक अच्छी बेटी एक अच्छी पत्नी और एक अच्छी माँ और यह तीनों हिस्सें से जीवन मे अलग—अलग भूमिका निभाते है। और एक बेटी, पत्नी और एक माँ उनके लिए, कुछ करें इन सब मे उम्मीद रखती है। पर इन सब बातों के लिए जरुरी है एक नारी का शिक्षित होना।

पूरुष के जीवन का
आधार है नारी,
कभी माँ, कभी बहन, कभी बेटी,
तो कभी पत्नी है नारी

स्त्री शिक्षा :—

संस्कृत में यह उक्ति प्रसिध्द है, ‘‘नास्ति विद्यासमं चक्षूर्नास्ति मातृ समोगुरु’’, इसका मतलब है कि इस दुनिया में विद्या के समान क्षेत्र नही है और माता के समान गुरु नही है।

स्त्रियों के विकास के लिए शिक्षा एक आधार के रुप में विशेष रुप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा अन्य अधिकारों को सूरक्षित करने के लिए लडकियों और महिलाओं को सक्षमक रने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अगर महिलाएँ शिक्षित हों तो वे अपने घरों की सभी समस्याओं का समाधान कर सकती है। स्त्री शिक्षा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय विकास में मदद करता है। आर्थिक विकास और एक राष्ट्र के सकल घरेलू उत्पादन की वृध्दि में मदद करता है। महिला शिक्षा एक अच्छे समाज के निर्माण मे मदद करती है।

शिक्षा प्राप्त करके आर्थिक रुप से आत्मनिर्भर होने का अर्थ यह नही है की नारी शिक्षित होकर पूरुष को अपना प्रति द्वनद्वीत मानते हुए उसके सामने ही मोर्चा लेकर खडी

हो जाए। बल्कि वह आर्थिक क्षेत्र में भी पूरुष के बराबर समानता का अधिकार प्राप्त करके उसके साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध के समीकर्ण बनाने मे सक्षम बने।

स्त्री की शिक्षा गरीबी पर काबू पाने में एक महत्वपूर्ण कदम है। कुछ परिवारों का काम कर रहे पूरुष दूर्भाग्यपूर्ण दुर्घटनाओं में विकलांग हो जाते है। उस स्थिती में, परिवार का पूरा बोझ परिवारों की महिलाओं पर टिका रहता है। महिलाओं की ऐसी जरुरतो को पूरा करने के लिए उन्हे शिक्षित किया जाना चाहिए। वे विभिन्न क्षेत्रों में प्रवेश कर सकती है। महिलाएँ शिक्षकों, डॉक्टरों, वकीलों और प्रशासक रुप मे काम कर रही है। शिक्षित महिलाएँ अच्छी माँ बन सकती है। महिलाओं की शिक्षा से दहेज समस्या, बेरोजगारी की समस्या आदि सामाजिक शांति से जूडे मामलों को आसानी से हल किया जा सकता है।

स्त्री वर्ग तभी खूश हो सकता है जो जब नारी का एक अशिक्षित भाग भी शिक्षित होगा और सही मामलों में उसी दि नही महिला दिवस होगा जिस दिन देष ही हर नारी शिक्षित होगी। घर के चूल्दे चौकें से निकल कर अपनी एक अलग पहचान बनाएगी।

शिक्षा के कारण ही नारी सशक्त और आत्मनिर्भर बनकर अपने व्यक्तित्व हा उचित रुप से विकास कर सकती है।

स्त्री शिक्षा की वर्तमान दशा और दिशा :—

वर्तमान सामाजिक संदर्भ में, नारी— विषय पर चिंतन करने पर आरम्भ में ही यह तथ्य उजागर हो जाता है की इक्कीसवीं शताब्दी हा आरम्भ ही महिला सशक्तिकरण वर्ष २००१ के रुप में हुआ। नारी विषय पर केवल चर्चा ही नही, वरना ठोस एवं सार्थक कार्यक्रम भी क्रियान्वित हो रहे है।

देखा जाये, तो वर्तमान युग चेतना का युग है। तकनीक उपलब्धियों का युग है तथा प्राचीन मूल्यो में परिवर्तन का युग है। गत शताब्दी 'महिला जागरण का युग रही। ८ मार्च 'विश्व महिला दिवस' हे रुप मे मनाया जाता है। स्त्री को प्रगति पथ पर प्रेरित करने हेतू राजाराम मोहन रॉय, महात्मा गांधी, महात्मा फुले, महर्षि कर्वे ने जो महत्वपूर्ण योगदान किया उसी कारण वर्तमान नारी—संचेतना झंकृत हुई है। स्त्री जीवन मे शिक्षा से आमूलाग्र परिवर्तन हो रहा है। शिक्षा एवं आर्थिक स्वातंत्रता ने नारी को नवीन चेतना दी है। स्त्री शिक्षित होने से बालिका— शिक्षा को बढावा मिला, बल्कि बच्चों के स्वास्थ और सर्वागीण विकास में भी तेजी आई है।

गांधीजी ने कहा था की एक लडकी की शिक्षा एक लडके की शिक्षा की उपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है क्यों लडके को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित होता है किन्तू एक लडकी की शिक्षा से पूरा परिवार शिक्षित हो जात है। शिक्षा वह पुंजी है जो जीवन के वह सभी द्वार खोल देती है। जो कि आवश्यक रुप से सामाजिक है। शिक्षा से स्त्री अपनी स्थिती व अपने अधिकारों के विषय में सचेत होने लगी शिक्षा ने उन्हे आर्थिक राजनैतिक व सामाजिक न्याय तथा पूरुष के साथ समानता के अधिकारों की माँग करने को प्रेरित किया।

महिला शिक्षा समाज का आधार है। स्त्री माता के रुप में बच्चे की प्रथम अध्यापक बनती है। महिला शिक्षा एवं संस्कृति को सभी क्षेत्रों में पर्याप्त समर्थन मिला। अद्यापि कुछ समय तक महिला शिक्षा के समर्थक कम किन्तू आज समय एवं परिस्थितीयों ने महिला शिक्षा हो अनिवार्य बना दिया है। आज के समय में स्त्री ने स्वयं के अनुभव के आधार पर, अपनी मेहनत और आत्मविश्वास के आधारपर अपने लिए नई मंजिले, नये रास्तों का निर्माण शिक्षा से किया है।

आज नारी जीवन के हर क्षेत्र में कदम बढा रही है। आज की नारी अपने कर्तव्यों को गृहकार्यो की इतनाही नही अपने सामाजिक दायित्व के प्रति भी सजग है। वह अब स्वयं के प्रति आवाज उठाने का तरीका जानती है। कोई सिर्फ यह कहकर उनके आत्मविश्वास को तनिक भी नही हिला सकता कि वह एक नारी है। शिक्षा के चलते नारी जागरुक हुई और इस जागरुकता ने नारी के कार्यक्षेत्र की सीमा को घर के चारही दीवारो से बाहर प्रभाव के चलते आज नारी भी अपने करियर के प्रति सजग है। इससे जहाँ नारी

अपने पैरो पर खडी हो सकी, वही आर्थिक आत्मनिर्भरता ने उसे रचनात्मक कार्यो हेतु भी प्रेरित किया । शिक्षा के कारण महिलाओं में जागरुकता आई है।

वक्त के साथ नारी का स्वभाव और चरित्र भी बदला है एवं अपने अधिकारों के प्रति वह बखूबी जागरुक हूई है। राजनीति प्रशासन, समाज, उद्योग व्यवसाय, विज्ञान—प्रौद्योगिक फिल्म संगीत, साहित्य, मडिया, चिकित्सा, शिक्षा, कला, संस्कृति, आय.टी, सैन्य से लेकर अंतरिक्ष तक नारी ने छलांग लगाई है। नारी की नाजूक शारिरिक रचना के कारण यह माना जाता है कि वे सुरक्षा जैसे कार्यो का निर्वहन नही कर सकती। पर बदलते वक्त के साथ यह निथक टूटा है। कल्पना चावला, सुनिता विल्यम ने तो अंतरिक्ष तक की सैर की। पंचायतो में महिला को आरक्षण मिला उसका उपयोग करते हुऐ नए आयाम रच रही है, वही विधायिका, कार्यपालिका एवं न्याय पालिका मे भी महिलाओं का प्रतिनिधित्व बढा है।

साहित्य के माध्यम से नारी ने जहाँ पूराने समय से चली आ रही कु—प्रथाओ पर मात किया, वही समाज को नए विचार भी दिए। शिक्षा से अपनी विशिष्ट पहचान के साथ नारी साहित्यीक व सांस्कृतिक को नई ऊँचाईयाँ दे रही है। स्त्री— शिक्षा से जागरुक बन गई है और स्त्री को अपनी अभिव्यक्तियों के विस्तार का सुनहरा मौका भी दिया है। साहित्य व लेखन के क्षेत्र में भी नारी का प्रभाव बढा है। सरोजिनी नायडू, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान, साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेता (१९५६), प्रथम महिला साहित्यकार अमृता प्रीतम, प्रथम भारतीय ज्ञानपीठ महिला विजेता (१९७६), अशापूर्णा देवी, मृणाल पाण्डे, चित्रा मुदगल, उषा प्रियंवदा, राजी सेठ, ज्योत्सना मिलन, अरुधंती रॉय, आदि नामो की एक लंबी सुची है जिन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं को ऊँचाईयों तक पहूँचाया।

खेल कुद मे भी महिला अपनी पहचान बना रही है। आज की समय मे महिला क्रिकेट भी हो रहा है। उसमे भी महिला आतरराष्ट्रीय क्रिकेट मे भारतीय महिला कर्णधार मिताली राज अर्धशतक पूर्ण करके पहिली महिला खेळाडू ठहरी है। सानिया मिर्झा, सायना नेहवाल, आदि क्रिकेट टेनिल, हॉकी, बॅडमिंटन जैसे खेलों मे अपना अस्तित्व निर्माण कर रही है।

वर्तमान दौर मे नारी हा चेहरा बदला है। नारी समानता के स्तरपर व्यवहार चाहती है। आज की नारी कल्पना चावला, सुनिता विल्यम, पी.टी.उषा, किरण बेदी, सुष्मिता सेन, प्लाइंग ऑफिसर सुष्मा मुखोपाध्याय, कैपृन दुर्गा बैनर्जी, ले.जनरल पुनीता अरोडा, संतोष यादव, मेधा पाटकर, अरुंधती रॉय जैसी शक्ती बनकर समाज को नई राह दिखा रही है। और वैष्विक स्तर पर नाम रोशन कर रही है। नारी की शिक्षा दिक्षा और व्यक्तित्व विकास के क्षितिज दिनो ब दिन खुलते जा रहे है। जिसमे तमाम नए—नए क्षेत्रों का विस्तार हो रहा है। नारी आज न सिर्फ सशक्त हो रही है। बल्कि लोगों को भी सशक्त बना रही है। नारी उत्कर्ष आज सिर्फ एक जरुरत नही बल्कि विकास और प्रगति हा अनिवार्य तत्व है।

स्त्री शिक्षा का महत्व :—

महिलाओं के सामाजिक सशक्तिकरण में शिक्षा की अहम भूमिका है। स्त्री के सर्वागीण विकास के लिए प्रथम एवं मूलभूत साधन है क्योंकि महिला के शिक्षित होने पर जागरुकता, चेतना आएगी, अधिकारों की सजगता होगी, रुढियां कुरीतियां कुप्रथाओं का अन्धेरा छंटेगा और वैचारिक क्रान्ति से प्रकाश पुंज फुट निकलेगा। शिक्षा के माध्यम से महिलाएं समाज मे सशक्त समान एवं महत्वपूर्ण भूमिका दर्ज करा सकती है। शिक्षित महिलाएं न केवल स्वयं आत्मनिर्भर एवं लाभान्वित होती है। अपितू भावी पीढियां भी लाभान्वित होती है। शिक्षा एक ऐसी सम्पत्ति है जिसे न छिना जा सकता है और नाही बाँटा जा सकता है। दुसरी और ऐसा हथियार भी है जिसके बल पर कोई भी युध्द लडा जा सकता है, अब चाहे वह शोषण, समानता, अन्याय, अत्याचार के विरुध्द ही क्यों ना हो।

शिक्षा सम्पूर्ण अज्ञानता रुपी अंधकार को दूर करके विकास और उन्नति के मार्ग खोलती है।

बेटी भार नही है, आधार,
जीवन है उसका अधिकार।
शिक्षाहै उसका हथियार।
सब सपने हो जाये साखार।

संदर्भ सूची

१. तुंडूरवार संदीप, (संपा. २०१७), शिक्षण आणि मानवी हक्क, मेहेरबाबा पब्लिकेशन, नागपूर.
२. पाटील सुजय (संपा.२०१६), मानवी हक्कांचे स्वरूप आणि वास्तव, प्रारूप प्रकाशन, कोल्हापूर.
३. चोरमारे विजय, स्त्री सत्तेची पहाट एक्स्प्रेस, पब्लिकेशन हाउस , कोल्हापूर.